मातृभाषा*

कालू राम शर्मा

मातृभाषा याने कि
नवजात बच्ची के कानों में पड़ने वाले शब्द
माँ के दूध के जैसे मीठे, गुनगुने,
बच्ची घर आँगन में तुतलाते हुए बतियाती है
बच्ची को विचार व्यक्त करना सिखाती है
माँ के दूध और मातृभाषा के
सहारे बच्ची बैठना, बोलना, चलना सीखती है
भाषा अपने को व्यक्त करने का ज़रिया है
भाषा इंसान को इंसान के करीब लाती है
भाषा ही तो इंसान को
जानवरों से अलग करती है
तरह-तरह की भाषाएँ
जहाँ शब्द नहीं होते
वहाँ शस्त्र उठते हैं
वाणी स्कूल जाती है
स्कूल में वाणी चुप रहती है
वाणियाँ स्कूल से भाग जाती हैं
कई वाणियाँ स्कूल जाती ही नहीं
स्कूल में वाणियाँ इसलिए चुप रहती हैं
कि उन्हें स्कूल की भाषा में बोलना नहीं आता
स्कूल की भाषा वाणी के मुँह में ताला जड़ देती हैं

---

*कविता राज्य शिक्षा केंद्र, मध्य प्रदेश, भोपाल द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिका *पलाश* से साभार